नव भारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

बिहार को विकास की पटरी पर लाने की चुनौती

बिहार की राजनीति में सम्राट चौधरी का मुख्यमंत्री बनना केवल नेतृत्व परिवर्तन नहीं, बल्कि एक बड़े सामाजिक-राजनीतिक प्रयोग का संकेत भी है. भाजपा ने उन्हें आगे कर यह स्पष्ट संदेश दिया है कि वह ओबीसी नेतृत्व को केंद्र में रखकर अपनी रणनीति को और धार देना चाहती है. लेकिन सत्ता की यह नई पारी अपने साथ कई जटिल चुनौतियां भी लेकर आई है,जो आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक तीनों स्तरों पर कसौटी साबित होंगी.

सबसे पहले आर्थिक मोर्चे की बात करें तो बिहार लंबे समय से पिछड़े राज्यों की श्रेणी में रहा है. उद्योगों का अभाव, सीमित निवेश और उच्च बेरोजगारी दर राज्य की पुरानी समस्याएं हैं. सम्राट चौधरी के सामने सबसे बड़ी चुनौती यही होगी कि वे निवेश का माहौल बनाएं और रोजगार सृजन को गति दें. केंद्र की योजनाओं और 'डबल इंजन' सरकार का लाभ उठाते हुए बुनियादी ढांचे,सड़क, बिजली, और डिजिटल कनेक्टिविटी को मजबूत करना उनकी प्राथमिकता होगी. साथ ही, कृषि पर अत्यधिक निर्भरता को कम कर वैकल्पिक आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देना भी जरूरी है, अन्यथा पलायन की समस्या जस की तस बनी रहेगी.

राजनीतिक स्तर पर चुनौती और भी पेचीदा है. बिहार की राजनीति जातीय समीकरणों के इर्द-गिर्द घूमती रही है. ऐसे में ओबीसी चेहरे के रूप में सम्राट चौधरी की नियुक्ति भाजपा के लिए एक अवसर भी है और जोखिम भी. उन्हें न केवल अपने पारंपरिक वोट बैंक को बनाए रखना होगा, बल्कि सहयोगी दलों और विपक्ष के आक्रामक रुख का भी सामना करना पड़ेगा. नीतीश कुमार जैसे अनुभवी नेता की विरासत और प्रशासनिक शैली की तुलना भी उनके लिए एक दबाव बनेगी. इसके अलावा, पार्टी के भीतर संतुलन बनाए रखना और स्थानीय नेताओं की महत्वाकांक्षाओं को साधना भी आसान नहीं होगा.

सामाजिक मोर्चे पर स्थिति और संवेदनशील है. बिहार में शिक्षा, स्वास्थ्य और कानून-व्यवस्था से जुड़े मुद्दे अभी भी गंभीर हैं. सरकारी स्कूलों की गुणवत्ता, स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच और महिलाओं की सुरक्षा जैसे विषय जनता की प्राथमिक चिंता में शामिल हैं. हाल के वर्षों में जातीय जनगणना और सामाजिक न्याय की बहस ने समाज को और अधिक राजनीतिक रूप से जागरूक बनाया है. ऐसे में सम्राट चौधरी को विकास के साथ-साथ सामाजिक संतुलन बनाए रखने की चुनौती का सामना करना होगा. इसके अलावा, युवा वर्ग की बढ़ती आकांक्षाएं भी सरकार के लिए एक कसौटी हैं. रोजगार, कौशल विकास और बेहतर जीवन स्तर की उम्मीदें अब पहले से कहीं अधिक हैं. यदि इन अपेक्षाओं को समय पर पूरा नहीं किया गया, तो यह असंतोष राजनीतिक रूप ले सकता है.

कुल मिलाकर सम्राट चौधरी के लिए यह कार्यकाल केवल शासन चलाने का नहीं, बल्कि विश्वास अर्जित करने का भी है. यदि वे आर्थिक सुधार, राजनीतिक संतुलन और सामाजिक समावेशन के इस त्रिकोण को साधने में सफल होते हैं, तो न केवल बिहार की दिशा बदल सकती है, बल्कि राष्ट्रीय राजनीति में भी एक नया उदाहरण स्थापित हो सकता है.

युद्ध के धमाकों से डूबा विश्व पर्यटन उद्योग

ईरान के खिलाफ अमेरिका व इजराइल के हमले के बीच पर्यटन की दुनिया मिसाइलों तथा बमों से इस कदर झुलस गई कि उसे पटरी पर आने में कम से कम एक साल तो लगेगा ही. भारत का पर्यटन उद्योग ही प्रभावित हुआ है, ऐसा नहीं है. दुबई, अमेरिका, सऊदी अरब, कतर, ओमान, बहरीन, कुवैत ऐसे खाड़ी देश हैं, जहां पर खासा नुकसान हुआ है. ईरान का पर्यटन उद्योग तो चौपट ही हो गया है. इसके साथ ही वह देश जो इन देशों के आसपास या इनकी वायुसीमा मार्ग में आते हैं, वे भी युद्ध की आग में झुलस गए हैं.

दुबई में भी जमकर सन्नाटा पसरा

फिर अगर वह पर्यटन के दौरान फंस गए तो क्या होगा? भारत में आगरा, जयपुर, दिल्ली जैसे शहरों में जहां पर विदेशी पर्यटक हमेशा आते थे, वहां पर भी पर्यटकों का टोटा है और होटल, ट्रैवल एजेंसियों में फांका मारने जैसी स्थिति है. कश्मीर, नार्थ ईस्ट, लेह-लद्दाख, नैनीताल, मनाली, शिमला जैसे शहर जो गर्मियों के लिए अप्रैल में ही बुकिंग के कारण उफनाने लगते थे, वहां लगभग नो लॉस, नो प्रॉफिट पर पर्यटकों को पैकेज उपलब्ध हैं और कई स्थान पर तो टूरिज्म एजेंसियां नाम मात्र की बुकिंग राशि में ही मान रही हैं. दुबई के लिए जो पर्यटक जाने को बेताब रहते थे वह भी इस बात से बच रहे हैं कि यहां पर क्या देख पाएंगे?

धार्मिक पर्यटन के साथ ही उन देशों को भी हानि हुई है जहां पर मेडिकल टूरिज्म या वॉटर टूरिज्म के लिए पर्यटक जाते थे. भारत में अप्रैल से लेकर अगस्त तक धार्मिक टूरिज्म का जबर्दस्त सीजन होता है. यहां पर चारधाम यात्रा के साथ ही दूसरी यात्राएं होती हैं. दूसरे देशों से हजारों मरीज अपना उपचार कराने आते हैं और यहां पर्यटन का भी आनंद लेते हैं. यूक्रेन रूस के युद्ध के कारण वहां का पर्यटन और एजुकेशन टूरिज्म तो पहले ही से गंभीर संकट में था. अब खाड़ी युद्ध ने स्थितियां और विकट कर दी हैं. खाड़ी युद्ध का सबसे बुरा असर दुबई पर हुआ है. यहां पर हर वर्ष कम से कम 15 मिलियन पर्यटक जाते थे,

लेकिन अब यहां पर सन्नाटा नजर आ रहा है. एयर ट्रैफिक रुकने के कारण यहाँ पर 50 प्रतिशत से अधिक पर्यटन स्थल पर सन्नाटा है और युद्ध के 40 दिनों में दो लाख से अधिक की बुकिंग रद्द हुई हैं. अभी जो दो हफ्ते का युद्ध विराम है, वह भी पर्यटकों में उत्साह नहीं ला पा रहा है. डर इस बात का है कि कहीं युद्ध फिर भड़का तो क्या होगा? इन परिस्थितियों में कोई भी पर्यटक या पर्यटन एजेंसी खतरा नहीं लेना चाहतीं.

टूरिज्म विशेषज्ञ समझ रहे हैं कि यदि युद्ध समाप्त घोषित नहीं होता है तो खाड़ी देशों को कम से कम 40 से 55 अरब डॉलर तक का नुकसान उठाना पड़ेगा. सर्वाधिक मारामारी ईंधन की है और भारत ही नहीं सभी देशों पर इसका सीधा असर आया है, जिससे हवाई किराए में उछाल आया है. छोटी से छोटी हवाई यात्रा के टिकट में कई हजार रुपए की वृद्धि दिख रही है. श्रीलंका जैसा देश जहां पर पर्यटक हनीमून के साथ ही भगवान राम से जुड़े तीर्थों को भी देखने जाते थे, वहां मार्च माह में करीब 18 प्रतिशत की कमी हुई है. यह यहां की अर्थव्यवस्था के लिए एक बड़ा खतरा है. दुबई, श्रीलंका की बात जानें दें, भारत को देखें. यहां पर पर्यटन सीजन आरंभ हो चुका है और जून में जब मानसून आ जाएगा तब तक का जो सीजन है वह काफी डिस्टर्ब हो गया है. इस बार गैस की किल्लत ने होटल ढाबों को ही नहीं उन लोगों को भी चिंता में डाल दिया है, जो उत्तराखंड चारधाम तथा आदि कैलाश यात्रा के लिए जाते थे.

सरकारी सूचना के अनुसार रजिस्ट्रेशन की संख्या में 40 प्रतिशत की गिरावट है. वर्ष 2025 में जब यह रजिस्ट्रेशन 17 लाख थे, तो अब 10 अप्रैल को यह 14 लाख पर ही सिमट गए हैं. भारत में गत वर्ष कश्मीर में पहलगाम के बाद जिस तरह की स्थितियां थीं अब पूरे विश्व में वही हालात हैं. पर्यटक और पर्यटन कारोबारी इस बात पर विश्वास कर ही नहीं पा रहे हैं कि युद्ध पूरी तरह से थम गया है. इसके पीछे कारण ट्रंप का बात पलटने में महारथ हासिल कर लेना माना जा रहा है. पर्यटक इस बात को लेकर भी चिंतित हैं कि युद्ध काल में जब भारत से बाहर रहने वाले भारतीय जो भारत वापस आना चाहते थे वह चाहकर भी नहीं आ पाए थे.

मनोज वार्ष्णेय

ग्वालियर चंबल डायरी

सबूतों के अभाव में नाकाम हुआ राजेंद्र भारती का 'आरोप बम'

हरीश दुबे

दतिया की सियासत में डॉ. नरोत्तम मिश्रा और राजेंद्र भारती की अदावत पुरानी है. दोनों ही क्रमश: तीन और दो बार इस सीट से विधायक रह चुके हैं. दतिया सीट से सर्वाधिक लंबे समय तक विधायक बने रहने का रिकॉर्ड नरोत्तम के ही नाम दर्ज है. हालांकि राजेंद्र भारती के पिता श्याम सुंदर श्याम भी यहां से दो बार विधायक रहे. इस तरह पारिवारिक विरासत की बात की जाए तो भारती के परिवार के पास चार बार दतिया की विधायकी रही है. बहरहाल, यह पुनरावलोकन इसलिए कि भले ही इन दोनों नेताओं के बीच लंबी राजनीतिक दुश्मनी रही हो लेकिन भारती के चुनाव को हाल ही में एमपीएमएलए कोर्ट द्वारा निरस्त किए जाने के मामले में नरोत्तम कोई पार्टी नहीं थे, यह संबंधित बैंक प्रबंधन द्वारा की गई शिकायत के आधार पर हुई सुनवाई का नतीजा था लेकिन कोर्ट का निर्णय आने के कई दिनों बाद राजेंद्र भारती ने सारा ठीकरा नरोत्तम पर फोड दिया है.

भारती का इल्जाम है कि नरोत्तम के खिलाफ वर्ष 2009 से जुड़े पेड न्यूज प्रकरण को वापस लेने के लिए उन पर लंबे समय से दबाव बनाया जाता रहा. बकौल भारती, मई 2024 में एक केंद्रीय मंत्री के ओएसडी के जरिए भी उन्हें संदेश भेजा गया, जिसमें भाजपा में शामिल होने, निगम-मंडल में अध्यक्ष पद दिलाने और आर्थिक नुकसान की भरपाई का प्रस्ताव दिया गया. सच्चाई यह है कि आरोप को साबित करने के लिए वे कोई ठोस प्रमाण पेश नहीं कर पाए हैं. वे अभी भी यही कह रहे हैं कि उचित समय आने पर वे सबूत भी पेश कर देंगे. अपना चुनाव निरस्त होने के खिलाफ दिल्ली हाईकोर्ट में भारती ने अपील कर रखी है, दतिया में फिलवक्त उपचुनाव होंगे अथवा नहीं, यह इस अपील पर सुनवाई उपरांत आने वाले न्यायिक दिशानिर्देश पर ही निर्भर है. यदि उपचुनाव की स्थिति बनती भी है तो भाजपा की तरफ से लगातार पांचवी बार नरोत्तम का चुनाव लड़ना तय है वहीं कांग्रेस में भारती के विकल्प के रूप में दतिया राजपरिवार के कुंवर घनश्याम सिंह का नाम उभर रहा है जो दतिया से दो बार विधायक रह चुके हैं,. वैसे दतिया कांग्रेस के दूसरी बार अध्यक्ष बने अशोक दांगी बगदा भी टिकट की दौड़ में हैं.

नियुक्तियों में सतीश की ही चली...

ग्वालियर कांग्रेस में भले ही विधायक सतीश सिकरवार और शहर सदर सुरेन्द्र यादव के बीच पटरी नहीं बैठ पा रही हो लेकिन यह सच है कि दिल्ली से भोपाल तक कांग्रेस के गलियारों में सतीश ने इस कदर पकड़ बनाई है कि वे जिला संगठन में भी मनचाही नियुक्तियां करा लेते हैं. पार्टी के अनुसूचित जाति विभाग में जिलाध्यक्ष पद के लिए पहले योगेश दंडोतिया की नियुक्ति की खबर आई, इससे पहले कि योगेश जश्न मना पाते, उनका नाम कट गया. विधायक सतीश के खास समर्थक पार्षद केदार बराहदिया को यह जिम्मेदारी सौंप दी गई.

नियुक्ति के साथ ही हटाए गए दंडोतिया का टेंशन मोड में आना स्वाभाविक था. उन्होंने प्रेस कॉन्फ्रेंस लेकर कुछ ऐसे गंभीर आरोप लगा दिए, जिनका उनके पास कोई सुबूत नहीं था. जब सुबूत मांगे गए तो जवाब था कि ऐसी चर्चा है. यह सच है कि मुख्य विपक्षी दल में सब कुछ ठीक नहीं चल रहा है. काम नहीं करने वाले पदाधिकारियों पर अनुशासन का डंडा चला है. पद लेकर घर बैठे युवक कांग्रेस के नेताओं पर कार्रवाई हुई है. युवक कांग्रेस के नॉन परफॉर्मेंस पदाधिकारियों को होल्ड किया गया है.

रुक जाना नहीं, अभी और हैं मौके...

एमपी बोर्ड द्वारा आज घोषित परीक्षा नतीजे मिले जुले खुशी ग़म वाले रहे हैं. इस बार 10वीं का परिणाम पिछले साल की तुलना में कमजोर रहा, नतीजन ग्वालियर प्रदेश के निचले प्रदर्शन वाले जिलों में शामिल हो गया है. जबकि 12वीं का नतीजा पिछले साल की तुलना में बेहतर रहा है. बहरहाल, ग्वालियर के बच्चों ने हर बार की तरह इस बार भी दमखम दिखाया है. ग्वालियर के अनमोल गोयल ने शानदार प्रदर्शन करते हुए प्रदेश में चौथा स्थान हासिल किया जबकि ग्वालियर की ही गौरी शर्मा ने 12वीं क्लास में पीसीएम संकाय में प्रदेश में दूसरी व ग्वालियर में टॉपर की रैंक हासिल कर गालव नगरी का मान बढ़ाया है. किन्हीं कारणों से परीक्षा में असफल रहे छात्रों के लिए हमारा यही संदेश, उदास होकर रुक जाना नहीं, बोर्ड उन्हें अपनी टैलेंट साबित करने फिर से मौका देने जा रहा है.

जज वर्मा का इस्तीफा, नोटों का क्या हुआ?

महाभियोग से बचने के लिए इलाहाबाद हाईकोर्ट के जज यशवंत वर्मा ने राष्ट्रपति के पास इस्तीफा भेजकर अपना बचाव कर लिया लेकिन यह पहेली नहीं सुलझी कि उनके पास इतनी रकम आई कहां से? वर्मा के दिल्ली स्थित आवास में जब आग लगी तो फायर ब्रिगेड कर्मियों को 500 रुपए वाले नोटों के बंडल जलते हुए दिखे. एक फायरमैन देखते ही चिल्लाया- गांधी जल रहे हैं! इन अधजले नोटों को लेकर जज का कहना था कि मेरे निवास में मेरी अनुपस्थिति में कौन आता था या किसने नोट रखे मुझे कुछ पता नहीं. किसी ने मुझे बदनाम करने के लिए ऐसा किया होगा. मैं इसके लिए कैसे जिम्मेदार हो सकता हूं? मानना होगा कि यह चालाकी भरी दलील है. आग न लगती तो नोटों का पता ही नहीं चलता. कोई सामान्य व्यक्ति वर्मा जैसी दलील दे तो क्या उसे स्वीकार किया जाएगा? न्यायालयीन समिति को उनका तर्क बिल्कुल नहीं पटा. वर्मा को तभी इस्तीफा देने की सलाह दी गई थी लेकिन उन्होंने इससे इनकार किया तब उनका दिल्ली से इलाहाबाद हाईकोर्ट में तबादला कर उनके न्यायिक कामकाज करने पर रोक लगा दी गई थी. देश के इतिहास में न्या. वर्मा सहित 6 जजों के खिलाफ महाभियोग दाखिल किया गया था लेकिन संसद में प्रस्ताव मंजूर होने के पहले ही 5 जजों ने इस्तीफा दे दिया था. सुप्रीम कोर्ट के पूर्व जज रामास्वामी के खिलाफ महाभियोग प्रस्ताव को लोकसभा में पर्याप्त समर्थन नहीं मिल पाया था. यदि जज वर्मा इस्तीफा नहीं देते तो संसद में उनकी फजीहत होती. ऐसा होना न्यायपालिका के लिए भी शोभनीय नहीं रहता. अब वर्मा जज के संवैधानिक पद पर नहीं है इसलिए क्या जांच एजेंसियां उनसे सामान्य नागरिक के तौर पर नोटों के बारे में पूछताछ कर सकती हैं? 2017 से 2022 तक न्यायपालिका में भ्रष्टाचार की 1631 शिकायतें आई थीं.

यदि जांच नहीं हुई तो यह प्रश्न हमेशा बना रहेगा कि वर्मा के पास नोटों के बंडल कहां से आए थे?

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

ट्रंप ने किया पोप का अपमान खुद को बताया ईसा जैसा महान

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, अमेरिका घोषित तौर पर ईसाई या क्रिश्चियन देश है. इसके बावजूद वहां के राष्ट्रपति ट्रंप ने ईस्टर के त्योहार पर ईसाइयों के धर्मगुरु पोप लियो का मजाक उड़ाया और खुद की तुलना ईसा मसीह या जीसस क्राइस्ट से करने का दुस्साहस किया. ट्रंप ने जीसस के रूप में अपनी एआई जनरेटेड इमेज शेयर की. इस संबंध में आपकी क्या राय है?'

हमने कहा, 'सत्ताधारियों का घमंड इसी प्रकार बढ़ जाता है. वे उन्मत्त होकर स्वयं को विलक्षण ईश्वरीय अवतार बताने लगते हैं. ट्रंप भी यही कर रहे हैं. उन्होंने कहा कि पोप लियो पहले अमेरिकी पोप हैं. यदि मैं व्हाइट हाउस में नहीं होता तो लियो भी वेटिकन में नहीं होते. मैं ऐसा पोप नहीं चाहता जो अमेरिका के राष्ट्रपति की आलोचना करे. मुझे भारी बहुमत से जिन उद्देश्यों की वजह से चुना गया, मैं बिल्कुल वैसा ही कर रहा हूं. मैंने रिकार्ड स्तर तक अपराधों की तादाद गिरा दी है और इतिहास में सबसे बड़ा स्टॉक मार्केट बना रहा हूं.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, क्या ट्रंप कुंवारी माता मेरी व जोसेफ की संतान हैं? क्या वे चाहते हैं कि जीसस क्राइस्ट के समान उन्हें भी सूली पर लटकाया जाए? वह तो ईसा मसीह के दया, प्रेम, स्नेह, भाईचारे व इंसानियत के मार्ग पर चलने की बजाय क्रूरता, नफरत, दुश्मनी और भीषण हिंसा के शैतानी रास्ते पर चल रहे हैं. यदि उनके मन में दया और प्रेम है तो सिर्फ इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के प्रति. कितने ही मासूम बच्चों, स्त्रियों की मौत के लिए जिम्मेदार ट्रंप खुद को ईसा मसीह जैसा बताते हैं. यह कितना बड़ा पाखंड है! वह चाहते हैं कि उनके ईरान पर हमले का पोप पूर्ण समर्थन करें. उनकी इस हरकत को देखकर कहना होगा- कौआ चला हंस की चाल! ट्रंप नोबल शांति पुरस्कार इसलिए पाना चाहते हैं क्योंकि वह दुनिया में स्मशान की शांति लाना चाहते हैं. विश्व की एकमात्र महाशक्ति अमेरिका के प्रेसीडेंट होने की वजह से ट्रंप मदमस्त हो गए हैं.' हमने कहा, 'मंदिर के शिखर पर बैठ जाने से कौआ पक्षीराज गरुड़ नहीं बन जाता. ट्रंप हिंसा की अति कर रहे हैं. अति से बहुत नुकसान होता है. कहा गया है- अति कामा दशग्रीव: अति लोभात सुयोधन:, अति दानात हत: कर्ण: अति सर्वत्र वर्जयेत! हद से ज्यादा लालसा से रावण का विनाश हुआ, दुर्योधन अपने लालच व कर्ण दान के अतिरेक में डूबा!'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12230

- डॉ. सागर खादीवाला

1	2	3		4	■	5	6
7			■		■	8	
	■	9	10		11		■
12	13	■		■		■	14
■	15	16		■	■	■	
■	17			■	18	19	
20		■	21	22			
23			■	24			■

बाएं से दाएं
1. सीता, राजा जनक की पुत्री (सं.) 5. साहूकार, धनी, भला आदमी 7. किसी चीज को तैयार करने में होने वाला व्यय 8. कण, दाना, सूजी 9. गुरुनानक के मत का अनुयायी 12. धूल, गर्द, फूलों का पराग 15. रमणीय, सुंदर, लाल रंग की 17. कुल, समग्र 18. हल्का नशा, मादकता 20. एकत्र, इकट्ठा 21. कर लगाना (टैक्सेशन) 23. बहरा 24. नशीला, नशा उत्पन्न करने वाला

ऊपर से नीचे
1. जलाशय (सं.) 2. नगीना, संख्या 3. चरखे या तकली पर रुई या ऊन का धागा बनाना 4. वह बौद्ध ग्रंथ जिसमें बुद्ध के पूर्वजन्म की कथाएं लिखी हैं 5. रथ चलाने वाला (सं.) 6. पवन, वायु 10. जिसका सिर झुका हुआ हो 11. कीच, कीचड़ 13. जल में डूबकर प्राण त्यागना, किसी वस्तु का जल में डूबकर नष्ट होना 14. चालचलन, व्यवहार 16. सेना, फौज 18. एक बाजा 19. मूर्ति, प्रतिकृति, चांदी (सं.) 20. जिस समय, जिस वक्त 22. सुंदर स्त्री, लक्ष्मी, सीता

Solution 12229

अ	रा	व	ली	■	स	मा	न
प	र	■	ल	क	ड़	दा	दा
क्ष	■	स	ना	त	न	■	र
■	क	म	■	रा	■	प	द
नि	र	र्थ	क	■	शा	ह	■
वे	त	न	■	अ	प	ल	क
द	ब	■	दु	म	■	वा	द
न	■	पो	ख	र	■	न	म

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष क प्रारंभ में नौकरी में स्थिति सामान्य रहेगी, अधिनस्थ कर्मचारियों का सहयोग मिलेगा, वर्ष के मध्य में सामाजिक कार्यों में संलग्नता रहेगी, व्यवसाय में वृद्धि होगी, आर्थिक लाभ होगा, उतावलेपन में लिये गये निर्णय हानिकारक रहेंगे, आर्थिक लेनदेन में सावधानी रखें, मित्र के सहयोग से उदासीनता दूर होगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को आर्थिक लाभ का योग है, व्यवसाय में वृद्धि होगी, कर्क राशि के व्यक्तियों को नौकरी में स्थिति सामान्य रहेगी, सिंह राशि के व्यक्तियों की सामाजिक कार्यो में संलग्नता रहेगी, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को अधिनस्थ कर्मचारियों का सहयोग मिलेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को उतावलेपन पर लिया गया निर्णय हानिकारक रहेगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों के लिये व्यक्तित्व में विकास होगा, आर्थिक लेनदेन में सावधानी रखें.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक गंभीर एवं स्वाभिमानी, यात्रा और मनोरंजन का शौकीन होगा, माता पिता को जीवन में सुख रखेगा, नौकरी के क्षेत्र में सफ्लता मिलेगी, भाग्योदय जन्म स्थान से दूर होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

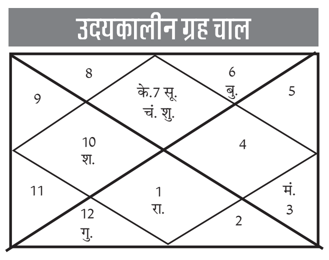

पंचांग

रा.मि. 26 संवत् 2083 वैशाख कृष्ण चर्तुदशी गुरूवासरे शाम 6/53, उत्तराभाद्रपद नक्षत्रे दिन 12/36, ऐन्द्र योगे दिन 9/21, विष्टि करणे सू.उ. 5/41, सू.अ. 6/19, चन्द्रचार मीन, शु.रा. 12, 2, 3, 6, 7, 10 अ.रा. 1, 4, 5, 8, 9, 11 शुभांक- 5, 7, 1.

मेष- विरोधियों से निपटने कूटनीति से काम लें, शिक्षा संतान के कार्यों में सफ्लता मिलेगी, अनावश्यक विवादों को टालें, न्यायालयीन कार्यों में सफ्लता मिलेगी.

वृषभ- सोच समझकर नये कार्य में हाथ ड़ालें, चिन्ता दूर होगी, नियोजित कार्यों में इच्छानुसार सफ्लता मिलेगी, दूर-दराज की यात्रा हो सकती है.

मिथुन- आप जिसे घाटे का सौदा समझ रहे हैं, उसमें अच्छा लाभ होगा, संतान को सफ्लता मिलेगी, कामकाज में विलंब होगा, मित्रों का सहयोग मिलेगा.

कर्क- पारिवारिक कलह दूर करने में सफ्लता मिलेगी, वरिष्ठ लोगों का सहयोग रहेगा, शारीरिक शिथिलता रहेगी, प्रियजनों का सहयोग रहेगा.

सिंह- टकराव आपसी बातचीत से सुलझ सकता है, उच्च अध्ययन का निर्णय होगा, भाग्यवर्धक प्रयासों में सफ्लता मिलेगी, निजी योजनाओं में सफ्लता मिलेगी.

कन्या- साझेदारी में नयी योजना शुरू हो सकती है, नये मित्र बनेंगे, उच्चाधिकारियों के सहयोग से आजीविका संबंधी प्रयासों में सफ्लता मिलेगी.

तुला- कारोबारी विस्तार की योजना बनेगी, लाभकारी अवसर सामने आयेगें, पुराना विवाद दूर होगा, यश मिलेगा. महत्वपूर्ण कार्य बनेगा.

वृश्चिक- भावनाओं पर काबू रखें, कौटुम्बिक सुख एवं दायित्वों की पूर्ति होगी, महत्वपूर्ण कार्य पूरा होगा, महत्वपूर्ण व्यक्ति से मिलने का योग है.

धनु- मामूली बात से करीबी रिश्ते में गलतफ्हमी हो सकती है, कामकाज के प्रति रूचि बनी रहेगी, शुभ समाचार मिलेगा, नियमितता का ध्यान रखें.

मकर- सकारात्मक सोच से उलझे मामले सुलझेंगे, आर्थिक कार्यों में शिथिलता रहेगी, शारीरिक अस्वस्थ्यता रह सकती है, सोचे हुये कार्यों में विलंब होगा.

कुम्भ- अधिकारियों के आदेश की अवहेलना न करें, प्रयास करने से इच्छित कार्य बनेंगे, रक्त संबंधियों में मधुरता आयेगी, परिश्रम की अधिकता रहेगी.

मीन- सहकर्मियों के असहयोग से तनाव बढ़ सकता है, प्रापर्टी संबंधी कार्यों में परिश्रम करना होगा, लेन-देन में सतर्कता वांछनीय है.

व्यापार भविष्य

वैशाख कृष्ण चर्तुदशी को उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी में 20 से 30 रूपये की तेजी होगी, रूई कपास में घट-बढ़ होगी, चावल आदि के भाव में समानता रहेगी. चना, जौ के भाव में समता रहेगी. भाग्यांक 8176 है.

SUDOKU 7362

5		9		8	3	2		
	2		4					8
3	8		5	2	6	1		
	7						9	5
9		3	6		8	7		4
2	6						1	
		5	2	7	1		8	6
6					4		7	
		8	9	6		4		2

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सु-दोकू 7361

8	2	5	3	6	7	9	1	4
4	6	1	8	9	2	3	7	5
3	7	9	1	5	4	6	8	2
1	3	7	4	2	9	5	6	8
6	5	2	7	1	8	4	9	3
9	8	4	6	3	5	1	2	7
2	4	6	9	8	3	7	5	1
5	1	3	2	7	6	8	4	9
7	9	8	5	4	1	2	3	6